

	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
	भाखल दरिया साहेब सत सुकृत बन्दी छोड़ मुक्ति के दाता नाम निशान सही। <b>ग्रन्थ गणेश गोष्ठी</b> <b>चौपाई</b> पंडित राज सुनो सत बानी। पढ़ि ग्रन्थ कछु लाज न आनी॥ वेद पढ़ा पर भेद न जाना। ताते जमके हाथ बिकाना॥ शास्त्र वेद पढ़ा तुम गीता। सत वचन किमि लागत तीता॥ करिषट कर्म देवन को पूजा। आत्मराम देव नहिं दूजा॥ संज्ञा तरपन करहु बनाई। कर्म अनेक कर्मा फैलाई॥ मूंदहि आंख नाक धरि सोई। ज्यों बग ध्यान धरे जल ओई॥ संसै काल कठिन है भाई। संशय करि करि गये नसाई॥ वेद गर्व ते पंडित भूला। चढ़ि चर्खा चौरासी झूला॥ राज गुरु राजन सिष किन्हा। विहल पाप आप सिर लिन्हा॥ जो जो खून करे वोय राई। सो तुम्हारे सिर आनि बिसाई॥ लोह के नाव पाषान के भारा। किमि करि जल में होय उबारा॥  <b>साखी - 9</b> कहे दरिया सुन पंडित, सतनाम है सार। अपने आपु विचारि के, उतरहु भव जल पार॥  <b>चौपाई</b> कहे पंडित सुनो हो संता। वेद पढ़े बीनु मिले न अंता॥ वेद पढ़े सो ज्ञाता होई। बिना वेद पशुआ नर सोई॥ वेद विमल मुनि कथा बखानी। वेद सो पंडित ज्ञानी॥ दया समेत सुरति मुनि संता। हरि नाम जपि अगम अनंता॥ हरि के चरन पद पंकज लोचे। काटि करम अध पातक मोचे॥ गुरु के वचन बूझे निजु वानी। आमृत रस रसना में सानी॥ संज्ञा तरपन औषट कर्मा। हरि के भक्ति सोई निजु धर्मा॥ गायत्री जप तप संयम करई। कोटिन अध पातक सब हरई॥ शालीग्राम परमेश्वर देही। इन्ह से प्रेम है सदा सनेही॥ छत्री के गुरु ब्राह्मण अहई। राजगुरु जग इमि करि लहई॥ गुरु होय दक्ष सीष के तारे। सीस के पाप गुरु नहि हारे॥ गुरु बिनु जप तप कोई ना करई। गुरु बिना भव सागर परई॥ गुरु बिनु तरहिं न तीनों देवा। राम करहिं पुनि मुनिका सेवा॥					
	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - २			
			गुरु कंह सरबस दीजिए, तन मन अरपेवो शीश।			
			गुरु बहिया गुरु देव हैं, गुरु साहब जगदीश॥			
			चौपाई			
सतनाम			देखाहु पंडित की चतुराई। कर्म कांड सभ कथा सुनाई॥			सतनाम
सतनाम			कर्मे बुड़ि मुआ संसारा। सोई करम जग किन्ह पसारा॥			सतनाम
सतनाम			आपन मन बोध गुरु ज्ञाता। बोधे सीष प्रेम रस माता॥			सतनाम
सतनाम			आपु न बोधे बोधे संसारा। सो गुरु परहिं नरक जम धारा॥			सतनाम
सतनाम			ब्राह्मण गुरु करही गुरु आई। ब्रह्म चिन्हे बिनु ठौर न पाई॥			सतनाम
सतनाम			ब्रह्म चिन्हे सो पंडित ज्ञाता। चिन्हे बिना जम करे निपाता॥			सतनाम
सतनाम			गायत्री कन्या वेद बखानी। ताके जाप मुक्ति फल ठानी॥			सतनाम
सतनाम			श्राप भया तव जग में आई। गाय स्वरूप देह उन्ह पाई॥			सतनाम
सतनाम			आपन कबहिं न होय उबारा। सो कैसे जन जगत उधारा॥			सतनाम
सतनाम			पुरुष छोड़ी नारि के धावे। ऐसा बुड़े थाह नहिं पावे॥			सतनाम
सतनाम			शालीग्राम ज्ञान कहां जाना। पाहन पुजि के पंडित भुलाना॥			सतनाम
सतनाम			मासा एक सोना तहां रहई। टांकी देत किछुओ नहिं कहई॥			सतनाम
सतनाम			ताके पुजहिं पंडित ज्ञाता। जाय परे भवसागर राता॥			सतनाम
			साखी - ३			
			गनेस ज्ञान को जानिये, सतगुरु का उपदेश।			
			मिले मुक्ति भव रहित है, जम नहिं पकरे केश॥			
			चौपाई			
सतनाम			ब्राह्मण विमल सदा जग मांही। जग्त चढ़े फिर ताकी बांही॥			सतनाम
सतनाम			जाके सकल सृष्टि यह जाना। किमि करि हमसे ज्ञान बखाना॥			सतनाम
सतनाम			अठारह वरन राज हम पाई। वरण-वरण का भेद बताई॥			सतनाम
सतनाम			हमसे वेद पड़ा संसारा। भागवत गीता ज्ञान विचारा॥			सतनाम
सतनाम			जप तप संयम या जग करई। दान पुन्य भव सागर तरई॥			सतनाम
सतनाम			कोई धूम्र पान पाव में लागा। करिा षट-कर्म योग में जागा।			सतनाम
सतनाम			सुरसरि जल मज्जन जो करई। गंग तरंग पाप सब हरई॥			सतनाम
सतनाम			मुनि सभ करही पूजा के साजा। महा मुनि ऋषि औ राजा॥			सतनाम
सतनाम			सज्जन जन बैकुण्ठे बासा। हरि सुमिरे मेटे जम त्रासा॥			सतनाम
सतनाम			भक्ति पदारथ सोभा जग जानी। हरि के भक्ति सदा गुरु ज्ञानी॥			सतनाम
सतनाम			तीरथा बरत सकल गुन ज्ञाता। पंडित परहि प्रेम रस माता॥			सतनाम
			2			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - ४			
सतनाम			कहे गनेश गुरु ज्ञान है, भक्ति सदा परधान। श्री राम श्री राम हैं, करहिं सभे मुनि ध्यान॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			जब लगि पद नहि उलटी समाना। पंडित पढ़े का वेद पुराना। वेदे अरुझि रहा संसारा। जाल मीन जीव करे आहारा॥		सतनाम	
सतनाम			एक सो अनंत फंद बड़ भारी। बुझहु पंडित ज्ञान विचारी॥ भागवत गीता की यह बानी। गीता मथी के सार बखानी॥		सतनाम	
सतनाम			प्रथमे छीर सभे केहू जाना। छीर में वास जो रहा समाना॥ अवटे छीर अनल पर जाई। जोरन दे तब दहि जमाई॥		सतनाम	
सतनाम			मथनी मथी लैन जौ लीन्हा। लैन लीन्हा वास नहि दीन्हा॥ जब तावे तब निर्मल अंगा। भौ प्रगट परिमल के संग॥		सतनाम	
सतनाम			इमि करि ज्ञान बिलोवे ज्ञाता। सो पंडित भव कबहिं न राता॥ इमि करि प्रगट ब्रह्म कह जाणा। ज्यों जल कमल सदा परधाना॥		सतनाम	
सतनाम			का भौ भक्ति किये सिर भारी। का तुम प्रगट काया पखारी॥ का भौ फिरे दिगम्बर नंगा। का भौ उलटि आपु कह टंगा॥		सतनाम	
सतनाम			पानी रहे मछ औ दादुर। टंगे रहे वन में गादुर॥ पसु पंछी नंगे नंगे सब खाड़ा। रहा कुम्हार भस्म सो भरा॥		सतनाम	
			साखी - ५			
सतनाम			जब लगी विरह न उपजे, हृदय ने उपजे प्रेम। तब लगी हाथ ना आवहिं, धरम किये व्रत नेम॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			नाहि वेद लोक तुम जाना। बरबस हमसे ज्ञान बखाना॥ वसिष्ठ व्यास औ मुनि की वानी। सो सब मेटि कहावहु ज्ञानी॥		सतनाम	
सतनाम			नारद शारद और महेशु। सकल सृष्टि जिन्ह कहा संदेसू॥ अजपा जाप गगन में साधा। चंचल मन जिन्ह आपन बांधा॥		सतनाम	
सतनाम			कंद्रप जारि भसम करी राखा। सीव समाधी योग सभ भाखा॥ मारकण्डे जिन्ह दुर्गा भाषा। सकल सृष्टि वेद रचि राखा॥		सतनाम	
सतनाम			कहां ले कहो मुनिन के अन्ता। वेद विमल सुमिरहिं सब संता॥ निगम आदि अंत गोहरावे। जप तप संयम ध्यान लगावे॥		सतनाम	
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	त्रिगुण ताप नहिं व्यापेव ताही। सकल सृष्टि के कर्ता आही॥	सरग नरक नहिं ताकर अहई। चतुरानन वेद अस कहई॥	सर्व व्यापिक ब्रह्म सरूपा। जल थल धरती पवन अनूपा॥	तिनके तुम कृतम करि जाना। बड़े महासनि ज्ञान बखाना॥			सतनाम
सतनाम	साखी - ६						सतनाम
सतनाम	अब मोरे तन क्रोध भौ, सत मैं कहों पुकारि। उठिके जाऊँ भवन में, किमि करि तुमसे हारि॥						सतनाम
सतनाम	चौपाई						सतनाम
सतनाम	जागत सोवत भवन में रहई। सपना देखि सभनि से कहई॥	अद्भुत रूप देखा मैं कर्ता। सभ घट व्यापिक जल थल वरता॥	उन्हीं जो वाचन कहा मोही नीका। सुनो पंडित ज्ञान का टीका॥	दरिया अंश जो अहै हमारा। का तुम वेद कथा विस्तारा॥	उनसे भरम करहु जनी कबही। सत वचन चित राखहु अबही॥	अब दोविधा कबहिं जनी भाखहु। चरन कमल पद पंकज राखहु॥	सतनाम
सतनाम	जन्म नष्ट फिरि होंही तुम्हारा। सत वचन मैं कहों विचार।	भर्म करम बिसरावहु जाई। सतनाम सुमिरो चित लाई॥	अब मोरे दिल भौ विश्वासा। वोह करता के अजब तमाशा॥	कहे पंडित सुनो नरलोई। उन्ह से प्रेम है सदा समोई॥	जब अइहे उठव कर जोरी। प्रेम प्रीति मानो आमृत बोरी॥	भौ दरशन तब वृगसेव नैना। प्रेम प्रीति करि बोलब बैना॥	सतनाम
सतनाम	सादर करब विविध बहु भाँति। संत मिलन के जाति न पाँति॥	जो किछु पुछे क्रोध जनि करहु। परिमल अग्र प्रेम रस भरहु॥	जो ब्राह्मण घर होत अवतारा। बहुत जीवन कर होत उबारा॥	हो तुम हंस कुबुद्धि नर कागा। इमि करि मोह सभन्हि के लागा॥	काम क्रोध मोह जग माया। मन है लता सकल घट छाया॥		सतनाम
सतनाम	साखी - ७						सतनाम
सतनाम	कहे गणेश सुनि लिजिए, शीतल शब्द सुजान। नीच ऊँच पद पावहीं, सोई बड़ा जेहि ज्ञान॥						सतनाम
सतनाम	चौपाई						सतनाम
सतनाम	नीच ऊँच कर कौन बखाना। आदि अंत है ब्रह्म अमाना॥						सतनाम
सतनाम	4	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
दरपन टूक-टूक होय जाई। प्रगट कला सभ मांह देखाई॥	जौं लगि ज्ञान दृष्टि नहिं आवे। पारख बिना हीरा बिसरावे॥	लेही उठाय देही जिमि डारी। संग्रह शक्ति विषय व्यभिचारी॥	पंडित वेद विमल तुम जाना। माया ब्रह्म नाहिं पहिचाना॥	जब लगि सिकिल साफ नहि नैना। चक्षु विहुन का देखो ऐना॥	मुरचा मैलि ब्रह्म भौ छीना। ज्यों सेवार जल करे मलीना॥	नित लवलीन शक्ति के पासा। रस पिया प्रेम सो बासु कुबासा॥
कला सम्पूरन पंडित भयऊ। मैन मजीठ रंग चुभि गयऊ॥	कंज पुंज की खबरि न जाना। ममिता वेइली विषय लपटाना॥	कुमुदिन कला भंवरा रस पागा। पदुम प्रगास बास नहिं लागा॥	मृग मद माती घास कंह ढूंढा। भटकी भवन में परा अगूढ़ा॥	माया ब्रह्म और ज्ञान समेता। विवरन नीर छीर करि एता॥	संसृत जल पै भीतर रहई। हंस वंश गुन इमि करि गहई॥	
साखी - ८	हंस वंश गुन गहिर है मान सरोवर जाहि।	चतुर चित सो काग है, क्यों मुक्ता हल खाहि॥	चौपाई	पंडित हंसि के बोले वानी। निरालेप तुम कथा बखानी॥	निरालेप निर्गुन है नीका। सो तो चारि वेद का टीका॥	व्यापिक ब्रह्म है आपे आपा। सोग संताप दुःखा नाही तापा॥
पाप पुण्य का मेटनिहारा। निरंकार नहि अहै आकारा॥	निराकार विरले गति जाना। यह आकार है त्रीगुन बखाना॥	स्रवण चक्षु रसना नहि अहई। कर पल्लव पत्र नहि कहई॥	ऐसन निर्गुन निगम बखाना। सीव सनकादि आदि प्रमाना॥	साखी - ९	निराकार आकार नहिं निरालेप भगवान।	जल थल सकल व्यापिया, सुर नर माते ध्यान॥
चौपाई	कथे निरास आस कहां पावे। बिनु गुन ज्ञान कहां ते आवे॥	तुम जो निर्गुन कहा विचारी। ततु बिना काकर उजियारी॥	गुन विहुन नयन का हीना। सो कर्ता तुम कैसे चिन्हा॥			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	यह गुन वह गुन करो विचारा। निर्गुन नाम दृष्टि उजियारा॥	सतनाम	यह त्रिगुन जब जाय नसाई। वह गुन अमर लोक ले जाई॥	सतनाम	भुले पंडित पढ़ि के वेदा। आदि अंत नहि पाइन्ह भेदा॥	सतनाम
सतनाम	फिरि-फिरि जोइनि संकट में आवे। सतगुरु बिना ठौर नहिं पावे॥	सतनाम	भूले योगी आसन बांधी। तन साधत फिरि भया असाधी॥	सतनाम	जंगम योगी भेष बनाया। फिरि-फिरि भौजल भटका खाया॥	सतनाम
सतनाम	साखी - १०					
सतनाम	जब लगी सतगुरु ना मिले, कतनो कथे विराग।					
सतनाम	हंस वंश नहि मिलिया, रहा काग का काग॥					
सतनाम	चौपाई					
सतनाम	हिन्दू तुरुक तुम्ह दुई जो करई। एके ब्रह्म दुनो में लहई॥	सतनाम	मलेछ सोई जो मल के खावे। मलेछ सोई जो व्याज बढ़ावे॥	सतनाम	मलेछ सोई मुखा मदिरा भरई। मलेछ सोई पर तीरिया हरई॥	सतनाम
सतनाम	मलेछ सोई मीन मासु जो खावे। मलेछ सोई जेहि ज्ञान ना भावे॥	सतनाम	मलेछ सोई संत निन्दा करई। मलेछ सोई जो नरकहि परई॥	सतनाम	मलेछ सोई भूत पूजा करई। खांसी बकरा जीव सभ मरई॥	सतनाम
सतनाम	अठंइ दसंइ करे पूजा पसारा। महिषा मारि करे खौकारा॥	सतनाम	साखी - ११			
सतनाम	एतना जाति मलेछ है पंडित करो विचारा।					
सतनाम	कहे दरिया तब बाचिहो, जब समुझि परि टकसार॥					
सतनाम	चौपाई					
सतनाम	सबसे निषिद कलवार के कहइ। मदिरा आनि भरी मुखा भरई॥	सतनाम	सबसे भलि धोबी की गदही। लूगा। लाद के करे बदही॥	सतनाम	बिल्ली कबहू मुखा नाही धोवे। हांडी चाटी सकल नेम खोवे॥	सतनाम
सतनाम	स्वान कबहीं नहि करे आचारा। ताकर जूठ खाय संसारा॥	सतनाम	मखी काहू के हाथ ना आवे। गंध सुगंध सभे जुठिआवे॥	सतनाम	एतना जूठ खाय संसारा। तापर करे नेम आचारा॥	सतनाम
सतनाम	कहे दरिया यह जग रगरा। सतनाम कहू मेटे झगरा॥					
सतनाम	साखी - १२					
सतनाम	सतनाम सुमिरन करो, छोड़ो भ्रम व्यवहार।					
सतनाम	सत सुकृत के चिन्हिए, उतर जाहु भव पार॥					
सतनाम	ग्रन्थ गणेश गोष्ठी पूर्ण					
सतनाम	6	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम